Computer Proficiency Certification Test

Notations :

1.Options shown in green color and with ✔ icon are correct.

2.Options shown in red color and with ✖ icon are incorrect.

Question Paper Name:	Inscript Shift 2
Subject Name:	Inscript
Creation Date:	2016-07-10 17:09:11
Duration:	25
Calculator:	None
Magnifying Glass Required?:	No
Ruler Required?:	No
Eraser Required?:	No
Scratch Pad Required?:	No
Rough Sketch/Notepad Required?:	No
Protractor Required?:	No

Mock

Group Number :	1
Group Id :	87519613
Group Maximum Duration :	10
Group Minimum Duration :	10
Revisit allowed for view? :	No
Revisit allowed for edit? :	No
Break time:	1
Mandatory Break time:	Yes
Group Marks:	0

Hindi Typing Test

Section Id :	87519621
Section Number :	1
Section type :	Typing Test
Mandatory or Optional:	Mandatory
Number of Questions:	1
Number of Questions to be attempted:	1
Section Marks:	0
Display Number Panel:	Yes
Group All Questions:	No

Sub-Section Number:	1
Sub-Section Id:	87519621
Question Shuffling Allowed :	No

Question Number : 1 Question Id : 875196163 Question Type : TYPING TEST Display Question Number : Yes

बहुत समय पहले की बात है हिमालय के जंगलो में एक बहुत ताकतवर शेर रहता था। एक दिन उसने बारासिंघे का शिकार किया और खाने के बाद अपनी गुफा को लौटने लगा। अभी उसने चलना शुरू ही किया था कि एक सियार उसके सामने दंडवत करता हुआ उसके गुणगान करने लगा।

Restricted/ Unrestricted: Unrestricted
Paragraph Display: Yes
Evaluation Mode: Non Standard
Keyboard Layout: Inscript

Actual

Group Number :	2
Group Id :	87519614
Group Maximum Duration :	15
Group Minimum Duration :	15
Revisit allowed for view? :	No
Revisit allowed for edit? :	No
Break time:	0
Mandatory Break time:	No
Group Marks:	0

Hindi Typing Test

Section Id :	87519622
Section Number :	1
Section type :	Typing Test
Mandatory or Optional:	Mandatory
Number of Questions:	1
Number of Questions to be attempted:	1
Section Marks:	0
Display Number Panel:	Yes
Group All Questions:	No

Sub-Section Number:	1
Sub-Section Id:	87519622
Question Shuffling Allowed :	No

Question Number : 2 Question Id : 875196164 Question Type : TYPING TEST Display Question Number : Yes
हम सताए, खीजे, उकताए, गडढों-खडढों, गंदे परनालों से बचते, दिल्ली की सडक पर नीचे ज्यादा, ऊपर कम देखते चले जा रहे थे, हर दिल्लीवासी की तरह, रह-रहकर सोचते कि हम इस नामुराद शहर में रहते क्यों हैं, फिर करिश्मा, एक नजर सडक से हट दाएं क्या गई, ठगे से रह गए। दाएं रूख फलां-फलां राष्ट्रीय बैंक था। नाम के नीचे पट्ट पर लिखा था, यहां क्षण मिलता है। वाह, बहिश्त उतर जमी पर आ लिया। यह कैसा बैंक है जो रोकडा लेने-देने के बदले क्षण यानी जीवन देता है। क्षण-क्षण करके दिन बनता है, दिन-दिन करके बरसों-बरस यानी जिंदगी। आह, किसी तरह एक क्षण और मिल जाए जीने को। बडे-बडे ऋषि-मुनि तप-जप कर मांगते रहे, एक क्षण फालतू न मिला। जो ईश्वर देने को राजी न हुआ, बैंक देता है, वह भी दिल्ली शहर में, जहां किसी को रोककर रास्ता पूछो तो यूं भगा लेता है जैसे बम फटने वाला हो। फटता भी रहता है। किस किस्म के क्षण देता होगा बैंक, बचकाने, जवान या अधेड। हम कैसे भी लेकर खुश थे। कितने तक देता होगा, दस-बीस, सौ, हजार कितने। जितने मिलें, हम लेने को तैयार थे। पर वह मुफ्त में देने से रहा। दाम तो लेता होगा। क्षण की कीमत बाहर नहीं लिखी थी। पर भला कीमत, वजन, माप, सब दुकान के बाहर थोडी लिखा रहता है। जो भीतर जाएं, पूछें, किस दर बेचते हो क्षण। मन में जितना उछाह था, उतना ही असमंजस भी था। धडल्ले से जा घुसने से कतरा रहे थे। दिल कांप-कांप उठता है, सपना न हो कहीं। आंखें बंद कर लेते हैं और खोलने से कतराते हैं कि हरियाली, वीरानी या कचरे का ढेर न निकले। अब भी आंखें बंद कर, दोबारा खोलीं। पट्ट पर वही लिखा दिखा। यहां क्षण मिलता है। हमने जेब टटोली। फिर क्षण के तसव्वुर में ऐसे खोए कि बीच सडक ठाडे, जेब के मुसे-तुसे नोट गिनने लगे। जितने खरीद पाएंगे, खरीद लेंगे। पैसे का क्या है, हाथ का मैल है। जुगाड बिठा, दोबारा हाथ गंदे कर लेंगे। दिल्ली शहर में मैल की क्या कमी है, तभी पीछे से आकर तिपहिया, सीधा कमर से टकराया। हम दिल्ली की सडक मानिंद, दुहरे-तिहरे मोड खा, वापस इकहरे हुए और काल्पनिक बहिश्त से निकल असलियत में आ लिए। कमर को हाथों से दबा, खतरनाक सडक छोड, बैंक की चौखट पर जा टिके। तसव्वुर में क्षण पाने का खयाल इस कदर दिलकश था कि उसे छोड हकीकत से रू-ब-रू होने से कतराते रहे। जन्नत बख्शते पट्ट के सामने इंची-भर जगह में खुदी को समाए, दम साधे उस मिल्कियत को मन ही मन भोगते रहे, जो क्षण-भर बाद हाथ में होनी थी। साथ ही क्षण के जितने पर्याय थे, उनका स्वाद भी चखते गए। एक होता है, छोटे से छोटा क्षण। निमिष। उस नाम से बनारस में मिठाई भी मिला करती है। लब और जबान पर रहे निमिष-भर, जैसे दूध का बुलबुला। हम पता नहीं कितने पल, निमिष चखते खडे रहते, अगर बैंक के दरवाजे पर खडा मुछंदर दरबान चीखकर हमें चौंका न देता, 'ऐ, इधर खडा-खडा क्या करता है, आगे बढो।'

Restricted/ Unrestricted: Unrestricted

Paragraph Display: Yes
Evaluation Mode: Non Standard
Keyboard Layout: Inscript